'Uniresearch'- International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN 2321-4953
UGC Approved List No. 63005 *Impact Factor - 3.020* | (Online)
Vol. 10 Issue. 3 | March - 2018

दलित स्त्री लेखिका और साहित्य : सृजन

डॉ. जालिंदर इंगले
हिंदी विभागाध्यक्ष, ग.रा.गा. महाविद्यालय,
मालेगाव कॅम्प, जि. नाशिक

प्रा. श्रीमती. योगिता विष्णुपंत उशिर
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड, ता. नांदगाव जि. नाशिक

साहित्य सृजन प्रक्रिया एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। मनोवेगो को वाणी देने हेतू साहित्य सृजन होता है। साहित्य लेखन की इसी प्रक्रिया से समाज का हर एक घटक जुड सकता है। शायद इसी वजह से समाज की दलित नारियों ने भी अपनी भावनाओं को वाणी दी और साहित्य सृजन में योगदान दिया।

समाज व्यवस्था में चार वर्णो की निर्मिती हुई। उन चार वर्णो में कई जातियॉ उपजातियॉ बन गई। इन जातियों के परस्पर व्यवहार, रोटी-बेटी रिवाज अपने तक ही सीमित रह गये। जन्म के आधार पर जातियॉ स्पष्ट होने लगी। परिणामत: समाज में गतिशीलता कम हो गई। समाज व्यवस्था रुढी परंपरावादी हो गया। इस परंपरावादी समाज में नारी स्थिति पुरुष से निम्न रही। इस परंपरावादी समाज में नारी अपने आपको बचाती रही। नारी को वस्तु रुप में देखा गया, दासी, अबला के रुप में जानी पहचानी गयी। आज भी नारी इस पराधीनता के दुष्परिणामों को भोग रही है।

महिला लेखन साधारण 19 वी शताब्दी से आरंभ हुआ। इन स्त्रियों ने पुरुषों की बनाई चौखट तोडते हुए नारी अधिकारों के लिए आंदोलन किए। जिनमें अनेक साहसी स्त्रियों ने आरंभ किया। पुरुष साहित्यकारों की अपेक्षा महिला रचनाकारों ने नारी समस्या पर समाज का अधिक ध्यान आकृष्ट किया। यशपाल का कहना है- ""स्त्री जब तक अन्याय सहती रहती है, तब तक सताई जाती है। जिस दिन वह अन्याय का विरोध करना शुरु कर देती है, उसी दिन से सताना बंद हो जाता है।"1 इसी कारण आज की स्त्री ने लिखना-पढना सीखकर आत्माभिव्यक्ति करने की शक्ति हासिल कर ली है। आज की नारी ने अपनी पीडा को समाज के सामने प्रस्तुत किया और न्याय की मॉग वह कर रही है।

दलित महिलाओं का लेखन दलित स्त्री के अपमान और कष्ट का द्योतक है। लेकिन आज इसी दलित नारी ने अपने आप पर हो रहे इस शोषण को समाज व्यवस्था के सामने लाने के लिए कलम का हथियार अपनाया, और अनेक समस्याओं पर कडा प्रहार किया।

रजनी तिलक करोडो पदचाप हूँ। कविता में स्पष्ट रुप से कहती है- ""मेरे दु:ख, दुख नही, आशाओं का तूफान है। मेरे आँसू, आँसू नही, अंगार है। जंग का पैगाम है। मूक नही मै, आधी दुनिया की आवाज हूँ।"2 कुछ दलित लेखिकाओं ने आत्मकथा इस विधा में अपने शोषण को उजागर किया है- कौसल्या बसंती जी ने "दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथा में एक तो वह महिला और उस पर वह दलित महिला इस दोहरे अभिशाप को कैसे जी रही है इस गहरी संवेदना के साथ उन्होंने लिखा। वह कहती है- ""मेरे घर में तो कभी कभी ही रोटियॉ बनती थीं, वह भी घटियॉ गेहूँ की, न उसमें घी लगा होता न अचार।"3 दलित नारी कदम कदम पर समाज द्वारा अपमानित होती है और इसी बात को बसंत्री जी ने स्पष्ट किया है- ""मैने स्कूल के किसी कार्यक्रम में जैसे खेलकूद,